एम.ए.(हिन्दी) II समेस्टर
(मध्यकालीन हिन्दी) छठा पत्र

डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रश्न: महाकवि बिहारी के काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: भारतीय रस सम्प्रदाय के धुरंधर आचार्यों ने श्रृंगार रस को रसराज माना है। संस्कृत के अधिकांश महाकाव्य रस से आप्लावित हैं। कवि कालिदास से लेकर अब तक के कवि श्रृंगार रस के प्रति एक लगाव रखते हैं। कवि बिहारी लाल इसी श्रृंगार के रस सिद्ध कवि हैं। हिन्दी साहित्य में अबतक जितने ग्रंथ लिखे गए उनमें सबसे लोकप्रिय 'बिहारी सतसई' है। इस ग्रंथ में कविवर बिहारीलाल ने अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है। महाकवि तुलसीदास को छोड़कर अबतक सबसे अधिक टीकाएँ बिहारी लाल के सतसई पर लिखी गयी हैं।

ब्रजभाषा भाषियों के अतिरिक्त अब तक सभी आलोचकों ने 'बिहारी सतसई' की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। राधाचरण गोस्वामी ने बिहारी को सर्वश्रेष्ठ कवि माना है। उनका कथन है — "सूर तुलसी शशि और उडगन केशवदास हैं तो बिहारी हिन्दी साहित्य के शोभायमान पीयूषवर्षी मेघ हैं, जिनके आच्छादन मात्र से सूर्य, शशि और उडगन अदृश्य हो जाते हैं।" यद्यपि यह कथन अतिशयोक्ति लग सकता है किंतु यह स्वीकारना पड़ेगा कि बिहारी सतसई अपनी चमत्कृत वाणी तथा रस परिपाक में अद्वितीय है।

आज के युग में बिहारी सतसई पर अनेक आलोचनाएं लिखी गयीं और उस पर अश्लील आरोप लगाते रहे, फिर भी बिहारी ने श्रृंगार की रहस्यमयी बातों का स्पष्टीकरण किया है। श्रृंगार की जो उद्भावना प्रस्तुत की गयी है वह सर्व प्रथम संस्कृत के मूल ग्रंथों में उपस्थित है। प्रारंभ के वीरगाथा काल में उसका कारण कुमारियां बनीं। भक्ति काल में इष्टदेव की आराधना में माधुर्य भाव का प्रकटीकरण हुआ। भक्त कवियों ने आत्मा को पति-पत्नी या प्रेयसी, प्रीतम के रूप में प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त तत्कालीन विदेशी-भाव भी समाज में फैल रहे थे जिसमें मुसलमान शासकों की विलासिता और श्रृंगार की सामग्री थी। यही कारण है कि काव्य के क्षेत्र में श्रृंगार की भावना पनपी। यही समय है जब हिन्दी साहित्य में रीतिकाल का प्रचलन हुआ। लक्षण ग्रंथों का प्रचलन बढ़ने लगा। कविता 'स्वान्तः सुखाय' न होकर स्वामिनः सुखाय हो गयी। रीतिकाल के प्रथम कवि केशवदास

P.T.O

Scanned with CamScanner

इसके लिए रास्ता पहले ही निकाल चुके थे। इन सब परिस्थितियों और प्रभावों से उस युग में कोई भी रसिक जन इससे अछूता रह नहीं सकता था। इसी रसमयी भावना से प्रेरित होकर बिहारीलाल ने अपनी कविताओं में श्रृंगार के विराट चित्र को उपस्थित किया।

बिहारी सौन्दर्य के उपासक कवि थे। उनका प्रेम सौन्दर्य का दर्शन मात्र नहीं देखा, उनमें श्रृंगार की भावना उत्कृष्ट रूप में फूटी थी जिसका आधार नायक और नायिका का प्रेम-व्यापार था। इस संबंध में अंग्रेजी कवि कीट्स (Keats) का नाम लिया जा सकता है जिन्होंने सौंदर्य के अनुपम चित्र उपस्थित किए। उनकी ऐन्द्रिकता प्रसिद्ध है। सौन्दर्य प्रेम और सौन्दर्यमय सत्य के सिद्धांत ने कीट्स को पूरे संसार में अमर कर दिया। बिहारी का सौंदर्य कवि कीट्स से जरा भी कम नहीं है। इन्होंने अपने काव्य का आरंभ ही अपने आराध्य देवी प्रभावोत्पादक सौंदर्य से किया था। बिहारी सौंदर्य के चित्र खींचने के कला में माहिर थे। वे जहाँ कहीं किसी को सौन्दर्य की स्थिति में देख लेते थे, उसी क्षण अपनी लेखनी से उसमें चित्र भर देते थे। राधिका का कृष्ण को माखन खिलाना, छींके से हँड़ियाँ उतारना, एक हाथ से छींके को पकड़े रखना और दूसरे हाथ से हँड़िया को उठा लेना ऐसे कुछ छोटे-छोटे चित्र हैं जहाँ प्रेम की उत्कृष्टता को दिखाया गया है। राधा की यह स्थिति कृष्ण को मोहित करती है। उस समय कृष्ण बोल पड़ते हैं तुम्हारे ऐसे खड़े रहने की स्थिति मुझको भली लगी।

इसी प्रकार एक अन्य स्थल पर नायक-नायिका को चित्र देखते हुए देखकर संदेह करती है। वह जानना चाहती है कि नायक किसके चित्र को तल्लीन होकर देख रहा है। संदेह ने नायिका को उत्सुक बना दिया है। अब उसी का चित्र होने से वह इतनी प्रसन्न है कि नायक को देखते-देखते वह स्वयं चित्र हो गयी है —

कुचिते चित चलति न ठाति, हँसति न झुकति बिचारि।
लिखत चित्र पिय लखि, चितै रही चित्र लौं नारि।।

इतने पर भी बिहारी संतुष्ट नहीं होते। उनकी दृष्टि में सौंदर्य के बड़े चित्रकारों में कुछ कमी है कि तुरन्त कह उठते हैं —

लिखन बैठि जाकी सबिहि, गहि-गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।

P.T.O.

इन चित्रों में बिहारी की अनूठी मौलिकता देखी जा सकती है। चित्र गढ़ने की कला में बिहारी सिद्धहस्त थे। आधुनिक जगन्नाथदास रत्नाकर ने भी बिहारी के कवित्व का लोहा माना है। उन्होंने बिहारी का अनुकरण किया है। बिहारी ने विरह के विषम ताप से संतप्त नायिका बड़ी विदग्धता के साथ दूती द्वारा नायक के सुदर्शन होने की प्रार्थना कराई और साथ ही सुदर्शन शब्द से सुदर्शन चूर्ण का संकेत देकर वैद्यक ज्ञान का परिचय कराया है —

यह बिनसुत नगु राखिकै जगत बड़ौ जसु लेहु।
जरी विषम जुर जाइए, आइ सुदरसन देहु॥

प्रायः सभी आचार्य ने रस को काव्य की आत्मा माना है। रस परिपाक की दृष्टि से बिहारी अद्वितीय है। यद्यपि बिहारी ने कोई लक्षण ग्रंथ की रचना नहीं की फिर भी दोहों की पृष्ठभूमि में उस समय के रीति ग्रंथों का पूरा विधान रख दिया। रस सामग्री में सभी भाव अपना स्थान रखते हैं किंतु विभावों का अनुभावों का जैसा सीधा वर्णन हो सकता है, वैसा स्थायी और संचारियों का नहीं। ये आधार अनुभावों के द्वारा ही अनुमेय रहते हैं। किसी मानसिक दशा को उसके नाम से बताने में तो स्वशब्द वाच्यत्व दोष माना जाता है। बिहारी ने इन्हीं अनुभावों और विभावों के द्वारा शृंगार रस को व्यक्त किया है।

बिहारी में सबसे अधिक विशेषता समास गुण या समास प्रकृति का है। उन्होंने अपनी कविता के लिए दोहा या सोरठा दोनों का प्रयोग किया। इनकी समस्त रचना मुक्तक है। दोहा मात्रिक छंदों में बहुत छोटा है। किंतु भाव की गंभीरता उनमें कूट-कूट कर भरी है। आचार्य शुक्ल ने कहा था कि शब्दावली का प्रयोग करते हुए हम कह सकते हैं कि सफल मुक्तककार बिहारी ने जो कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की समास शक्ति वांछनीय है, बिहारी में पूरी तरह से वर्तमान थी। बिहारी की यह विशेषता कल्पना के सहारे बहुत से चित्रों को एक साथ उपस्थित कर देते हैं —

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौंहन हँसै, देन कहै नटि जाय॥

इस प्रकार सर्वत्र सिद्ध है बिहारीलाल के काव्य में उक्ति-वैचित्र्य के साथ भावों का एक ऐसा सौंदर्य मिलता है कि पाठक उसमें डूब जाए। इनके भावों और काल्पनिक चित्रों के साथ-साथ शब्दावली भी चलती रही है। मधुर भाव के लिए उन्होंने मधुर भाषा का प्रयोग किया है।

Scanned with CamScanner